(३) [illegible] :-

[illegible] ([illegible]) [illegible]

१) [illegible]

२) [illegible]

३) [illegible]

४) [illegible]

५) [illegible]

६) [illegible]

७) [illegible]

८) [illegible]

९) [illegible]

१०) [illegible]

११) [illegible]

१२) [illegible]

१३) [illegible]

१४) [illegible]

१५) [illegible]

-: अम्बरी :-

१) मानवतावादी :-

अम्बरी रघुनाथसे स्पष्ट कहती है कि, वह अब जीवनसे छुट्टी लें। लेकिन अन्य हत्या करके नही तो हर एकको क्षमा कर दो। ताकि तुम मानवता वादी दृष्टीसे सबको देखो। मुनीश्वरको क्षमा कर दो। और अमरोकोभी क्षमा कर दो। अपने हृदयसे सब कुछ निकाल दो और मन साफ कर दो। संकुचित सीमाओंको छोड दो और मानववादी बनो।

" जिन बातोंसे तुम्हे कष्ट होता है उन्हे हृदयसे निकालकर फेंको। तुम्हारे भीतरका भगवान प्रसन्न होगा। मुनीश्वर को क्षमा कर दो - यदि हो सके तो मुझे भी"- -

२) तत्ववादी :-

ललिता अम्बरी,दुखीया बनकर आ गई है। दुःख काफी लगती है। ललिता अब चल नही पाती। अम्बरीका कथन है कि अब सूरज डूबेगा तो दुःख कम होगी, वातावरण ठंडा होगा। पर ललिताका विचार है कि कल फिरसे सूरज निकलनेवालाही है। ललिता अम्बरी को उसके अपने बारेमें पूछती है कि उसकी पारिवारीक दशा पूछती है पर अम्बरी का न तो घर है न कोई परिवार। सारा जग उसका परिवार है। "विश्वकुटुंब"ही अब उसका है।

" न मेरा कोई घर है न मेरा कोई परिवार है - मैं अकेले हूँ। "" [1]

कभी फिकर अम्बरीको नही है क्योंकि कल कुछभी हो सकता है। ऐसा अम्बरी का कहना है। प्रकाश एवं अंधःकार तो जीवनमें आते जाते रहते है। इन दोनोंके सिवाय जीवन नही। जीवन मरणकी दोनोंका स्थान सुख दुखके इतनाही महत्वपूर्ण है। दोनो सत्यके टुकडे हैं। जीवनमें किसी एकको लेकर काम नही चल सकता।

१) रा.का.मंदिर पृ.२१ अम्बरी.
२) रा.का.मंदिर पृ.५८ अम्बरी.

दुःख सुख दोनों जीवनके परिप्रेक्ष्य हैं। ऐसा उसका अनुभव बन गया है।

"यह प्रकाश और अंधःकारको तुम्हारे मनका है। दुनियाका नहीं। दुनियामें तो वे मिले हुये हैं एक सब और एक और कुछ नहीं। प्रकाश और अंधःकार में सामंजस्य सुख और दुःखमें सामंजस्य जीवन और मरणमें सामंजस्य। सत्य के टुकडे का न देखो - रहने दोनों एक और तब देखो।" 2

रघुनाथ और ललिताका एक दूसरेको चाहना अंबरीके लिये काफी समाधानकी बात है। क्योंकि वह समझदार है। रघुनाथसे वह समझौता करनेके लिये कहती है। क्योंकि उसने सुखके अनुभवने व्यक्तिजीवनमें समझौतेकाही तत्वज्ञान अपनाया है। उसका विश्वास है कि इसी समझौतेसे जीवनमें मुक्ती मिलेगी। आगे बढना है या अगर ऊँचा उठना है तो समझौता करना जरुरी है।

" ये दुनिया कितनी नाचीज है। मैं इसके सभी कार्योंमें रह सकती हूँ। लेकिन हमेशा ऊपर। मेरे भगवान मुझे दुनिया दे सकेंगे। आपको इसी दुनियाके साथ समझौता करना चाहिये। आगे बढनेके लिये या ऊँचे उठनेके लिये यही चिन्ह तैयारीके हैं।" 3

ललिता अंबरीको धोखा दे बैठी है। ऐसी ललिताकी गलत फहमी होता है और वह धर्मकी बातें स्पष्ट रूपसे झूठी बताती है। अंबरीको अपमानीत करती है कि अंबरीने उसे धोखा दिया। वह मुसलमान है। इसका पता ललिताको चलता है। पर अंबरीका कहना है कि धरम करम या मिट्टी का कुछ नहीं पूछना चाहिये। क्योंकि अंबरी हृदयसे हिंदू है। क्या हिंदू क्या मुस्लीम, सब धरम समान है। अंबरीने सब धरमोंमें एकही परमेश्वर देखा तथा जीवनमेंभी एकही तत्व पाया।

"मिट्टीके बारेमें क्या पूछती हो? मिट्टी तो सबकी एकही है।"

3) आस्तिकवादी :-

अंबरीने अंध अपने आपको बदल दिया है। वह अब परमेश्वरकी ओर लग गई है। मुनीश्वरका आगमन उसे अच्छा नहीं लगता। मनोही मुनीश्वरसे वेश्या-सुधार आश्रम खोल रखा है। पर मुनीश्वर उसको बदल नहीं पाया। स्वयं मुनीश्वरसे

2. रा.का मंदिर पृ.१०२ अंबरी
3. रा.का मंदिर पृ.७८ अंबरी

द्वेष करती है। अब उसकी प्रेमभावना खत्म हो गयी। उसकी विरक्तीवृत्ती शुरु है। पर वात्सल्यात्मक प्रेमसे अब वह द्वेष करती है। मुनीश्वर अपनी वात्सल्यकी दृष्टि व्यक्त करता है। पर अमरी को यह बात पसंद नहीं है। वह ईश्वरपर और शक्तीपर भरोसा करती है और उसके अस्तित्वसे डरनेके लिये कहती है।

" पापी पुरुष ईश्वरसेभी डरो "

मुनीश्वर अमरीको जबरदस्ती - पहला सुधार आश्रममें ले जाना चाहता है पर अमरीको सही परिस्थिती मालुम है। मुनीश्वर जबरदस्ती करना चाहता है। बार बार अमरी कहती है कि,

" वही जो ऊपर है,और जो यह सब देख रहे हैं "
ईश्वरसे डरो पापी" २

भगवानका बडा आश्रय अमरीको मिल चुका है। वह रघुनाथसे स्पष्ट कर देती है कि,उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। अंदर बाहरसे वह एकही है। सिर्फ रास्ता बदला है। वह भगवानकी हो गयी है। भगवान का आश्रय उसने लिया है। यही आत्मिकवृत्ती उसकी वृत्तिका उन्नती करता है।

" रघुनाथ बाबू व मैं ऊपर उठी और वे नीचे गिरी। मैं अब भी वही हूँ। वही शरीर वही आत्मा वह जिंदगी जिंदगी, सब कुछ वही - मैंने सिर्फ अपना रास्ता बदल लिया है। इसे गिरना समझो या उठना। कहाँ जाता है - कितनी दूर जाता है,यह मैं नहीं जानती - बस यही हूँ। मैं हूँ और भगवान है।। — ३

अमरी रघुनाथ तथा अमरी समझौता होनेके बाद उसी पहला सुधार आश्रममें रहनेकी इच्छा प्रकट करती है। इसलिये कि,भगवान की इच्छा है कि अमरी अब अपना कार्य उस सुधार कार्यालयमें करे। और आश्रमवासीयोंको भगवान की जरूरत है। अबअमरीको भगवान मिला है। वह उस ज्योतीका प्रकाश सब लोगोंको देगा।

"भगवानकी मर्जी। उन्होंने संकेत किया। मैं चली आयी।" ४

२.३.४.मंदिर पृ.१७२ अमरी

४) स्पष्टवादिता :-

अनवरी रघुनाथसे वार्तालाप चलता है। रघुनाथ उससे प्रेम नहीं करता। रघुनाथ न बल्कि उसकी दृष्टि मैली है। अनवरीके मनमें रघुनाथके प्रति प्रेमभावनाभी है। वह जानती है कि रामलाल,रघुनाथके पिताके लिये वह लायी गयी है। पर फिरभी रघुनाथको चाहती है। रामलाल यह देख नहीं पाता और क्रोधित स्वरमें अनवरी को पूछता है कि उसको राह तक नहीं. करना चाहिये। अनवरी स्पष्ट कर देती है थोडी देरके पहले वह उसे चाहिये थी और अब यह परिवर्तन कैसे हुआ? इतने जल्दी रामलाल उससे द्वेष कैसे करने लगा? अनवरी जानती है कि, वह वेश्या जरूर है पर सब कुछ छोड कर रामलालके लिये आयी है। अनवरी अहंभावी है। स्वाभिमानी भी है। इसीकारण वह अपमानित होना नहीं चाहती और स्पष्ट रूपसे पूछती है कि अब वे उसे छोड नहीं सकते।

" क्या हो गया? थोडी देर पहले मैं मीठी थी। अब कडवी हो गयी? आदमी कितनी जल्दी बदल जाता है ? अब मुझे लेना न कहोगे?

अनवरीको पता चला है कि, मुनीश्वर वेश्या - सुधार आश्रम निर्माण कर रहे हैं। लेकिन उसे पूर्ण रूपसे मालूम है कि यह ढोंग है, जो है सभ्यताके मुखौटेपर रूप चल रहा है। वह उसपर बिगडती है और कहती है कि स्वयंको देखकर फिर सुधार कार्यमें लग जाओ क्योंकि अगर सुधारका नाटक तुम करोगे तो तुम और किसी महिलाकी इज्जत लूटोगे। क्योंकि मुनीश्वरका चरित्र उसे मालूम है।

"मुनीश्वरजी आप दुनियाको धोखा दे रहे हैं। आप सुधार करने के लिये बनाये नहीं गये थे। आप तो बनाये गये थे दुनियाँको ठगनेके लिये। सुधारके बहाने जिसको फुसलाकर आप अपने आश्रममें रखेंगे उसमें कोई न कोई आपके मतलबकी मिल जायगी ।। २

२ रा का मंदिर पृ.७५ अनवरी.

५) वर्गविद्वेषता :-

अनवरी तथा उसकी दो दासियाँ चलते है। बीचमें ही वे पानी पीना चाहते है। वे दासियाँ अनवरी की नौकरानीयाँ(दासी) है। पर फिरभी अनवरी उसके हाथोंसे पानी पीती है। उसे पास बैठनेका आग्रह करती है। ललिताको यह बात खटकती है। उसका कहना है कि वे नीची जातिकी दासियाँ हमारे पास कैसे बैठेगी? अनवरीकी दृष्टिमें अब वर्ग जाती का बंधन नहीं रहा। उसकी दृष्टी समान बन गई।

" हाँ - तो क्या हुआ है ?

मनुष्य सब समान एक ही है " -

अनवरीका विचार है,दुनियामें पाप इसीलिये है कि यहाँ अमीर गरीब भेदभाव है। इसके मिटाना जरुरी है। तबतक समानता न आने पायेगी।

" दुनियामें इतना दुख और पाप इसीलिये है कि, यहाँ छोटा बडा अमीर गरीब अपना पराया इसीलिये। " २

६) प्रेमभावना :-

अनवरी रामलालके प्रेममें डूब गई है। रामलाल शरारती है। वह अनवरी और शराब चाहता है। और उसीमें डूबा रहना चाहता है। जब कभी वह अनवरीको समीप बुला लेता है तब अनवरी अपनी भावनाओं को काबूमें रख नहीं पाती। वह बेबस है। फिरभी प्रेमभावनाएँ बाहर नहीं आ सकती।

"क्या करुँ ? जब तू लेते हो - सारी देह सनसना उठती है। तुमने अपनी सारी रस्सियाँ काट डाली न - मेरे लिये। " १

अनवरी नारी है। नारी सुलभ भावना तथा प्रेम भावना उसकी अपनी मूलभूत आवश्यकता है। इसी कारण रामलालके प्रेमपाशमें भी वह अटक गई है।

रा.का.मंदिर पृ.५५ अनवरी

रा.का.मंदिर पृ.७ अनवरी.

७) समझदारीकी वृत्ति :-

अम्बरी जान गई है कि ललिता एवं रघुनाथ एक दूसरेसे प्रेम करते है। वह जानती है कि मानव जीवनमें प्रेमभावना पैदा होना बिलकुल सहजभाव है। और इसी कारण वह रघुनाथ तथा ललितासे इस प्रेम संबंधमें समझदारी रखकर आशीर्वाद देती है। रघुनाथकेप्रतिकी पहलेकी प्रतिभाओंकी भावना वह अब नहीं रखती। बल्कि "मैं तो इसे जिंदगीकी जीत समझती हूँ - मनुष्यके हृदयमें जो है और जो रहेगा - जिसे होना चाहिए - वही - और मैं प्रसन्न हूँ। ईश्वर तुम दोनोंको - १

८) तनहाई :-

अम्बरीको अपना अकेलापन खूब महसूस होता है। रामलालसे भी वह हार गई है। यह स्पष्ट है। अम्बरी जान गई है कि सिवाय शराब पिलानेके और किसी कामकी नहीं रही। अपने आपसे वह बहुत निराश है। तथा प्यारकी प्यासीभी है। रामलाल ने उसे "प्यार" नहीं किया इसका उसे दुःख है। स्त्री प्रेम चाहती है। शरीर प्रेमसे मनका प्रेम नहीं मिल सकता। अम्बरी सच्चे प्रेमसे दूर रही। सच्चे प्रेमकी तलाश वह करती रही। उसका समर्पण उसने दूसरोंके लिये हमेशा किया। उसका अपना कोई नहीं है, इसलिये वह निराधारतामें है। एकांत वासमें जीवनका अनुभव ले रही है। अम्बरी असहाय्य है। स्त्री अकेलेपनका तथा एकांतवासका अनुभव अधिक समयतक ले नहीं सकती। अम्बरी एक नारी है। उसकी मूल भूक पूरी होना आवश्यक है। शारिरीक तथा मानसिक संतोष उसे मिलना चाहिए। तथा इच्छाओंकी पूर्तिभी होनी चाहिये।

" क्या कहीं मन छू लेते हो - सारी देह झनझना उठती है। तुमने अपनी सारी रसियाँ काट डाली - मेरे लिये - मैं तुम्हारा सब कुछ"- १

रा.का.मंदिर पृ.११ अम्बरी.

रा.का मंदिर पृ.७ अम्बरी.

रामनाथभी अनमरी को पूर्ण प्रेम दे नहीं पाया। अनमरी का जीवन तथा यौवन अकेला बीता जा रहा है। उसका मानसिक समाधान नहीं हो पाता। वह असंतुष्ट है। उसकी मानसिक इच्छाओंकी पूर्तिसे वह काफी दूर है। इसीलिये जीवन का अकेलापन बढ़ता रहा है।

अनमरीने रामनाथसे प्रेम किया। रघुनाथ कोभी उसने चाहा। पर जब कभी तीसरा आदमी उसके जीवनमें आया। तबभी वह अकेली रही। जीवनमें सूना बहता रहा। वह करवटे बदलती आसमानके तारोंको ताकती। अपनी जवानी को तरसाती। कई दिन बितने पर जीवनमें प्रेमका साथी नहीं मिलता न प्रेम मिल पाता। उसकी प्रेम कामना अधूरीही रह जाती। वह प्रेमके लिये तरसती, तड़पती, रह जाती। इसपर कोई इलाज नहीं पाता।

" वह रातको करवटे बदलती। कभी आसमानकी और तारोंकी और चाँदकी और देखती रहती। ज्यों ज्यों दिन बितते गये, दर्द बढता गया। क्या देवताता कोई था नहीं?" २

(१)त्यागी :-

अनमरीने जीवनमें त्याग का महत्त्व समझा। औरोंको समझनेकी प्रवृत्ती

अपने कारण किसीको कष्ट न होवे इसका बोध किया। ललिता ने भी जब उसे दुतकारा और ठुकराया। चोरीका आरोप लगाया। तब अनमरी की समझ थी कि, शायद ललिता [illegible] विचार करती है। पर वास्तव उसमें ललिता का अविकसित स्वभावकी ही दिखती है। इसी कारण वह शांतिमूर्ति मूर्तिभी तोड़ा देती है तथा वह बंगलाभी छोड़कर चली जाती है।

"अगर तुम्हे कष्ट न हो -
मैं जा रही हूँ। " — १

१ राजहंस मंदिर पृ.७ अनमरी.
२ राजहंस मंदिर पृ.५९ अनमरी.

(१०) स्वार्थी :-

अम्बरी मुनीश्वरसे प्रेम करती है। वह जान गई है कि रामनाथ उसके बीच आ सकता है। उसे यह भी मालूम हुआ है कि रामनाथके घर न आनेकी चिट्ठी मुनीश्वरको दी है और अब उसके प्रेममें बाधा आनेवाली है। अम्बरी चाहती है कि, अब मुनीश्वरके प्रेममें कोई काँटा न हो। इसलिये वह रामनाथको जहर भी देनेकी तैयारी बताती है।

वह रामनाथके प्रेममें पागल हुई है और अब अलग तथा द्वेषके मारे वह मुनीश्वरकोभी खत्म कर देना चाहती है। उसके स्वार्थ के लिए वह अपना पहला प्रेमभी हमेशाके लिये खत्म करना चाहती है। उसके प्रेममें स्वार्थ है।

"कहो तो मैं उसे जहर " - - १

(११) उद्विग्नता :-

मुनीश्वर अम्बरीसे प्रेम करता है। जो अम्बरीको मालूम नहीं है। मुनीश्वर उसे रातदिन, हरघड़ी चाहता है। वह बात स्पष्ट करता है। वह विचित्र अवस्था अम्बरीके लिये है मुनीश्वर अम्बरीको हृदयसे लगाता है। अम्बरीकी परिस्थिती अजीब है। वह मुनीश्वरसे उसे मार डालने को कहती है क्योंकि रामनाथने उसे प्रेम नहीं दे सका। अब अम्बरीको मुनीश्वरका प्रेम नहीं मिला। अब उसे प्रेम मिला है तो वह रामनाथकाभी त्याग करना चाहती है। तथा उसी परिस्थितीमेंही मरना चाहती है और खुद मुनीश्वरसे उसे कहींभी ले चलनेकेलिये कहती है।

" मुझे मार डालो " १

" जहाँ जी चाहे " २

रा.का.मंदिर पृ.३३ अंबरी.
रा.का.मंदिर पृ.२८ अंबरी.
-"- -"- पृ.२७ अंबरी.

अनवरी मुनीश्वरसेभी तंग आ गई है। मुनीश्वर वेश्या-सुधार - आश्रम चलाता रहता है। अनवरी जानती है कि रघुनाथकोभी मुनीश्वरने बरबस किया है। कि रघुनाथ उसकोभी घरसे निकाल दिया है। इसीकारण वह रघुनाथके प्रति सहानुभूति निर्माण करतेती है। तथा मुनीश्वरके झूठे ढोंगोको वह खोलना चाहती है। वह मुस्कराते कहती है -

"तबियत चाहती थी सिर फोड दूं। या आपको -।

रघुनाथने देखा है कि, अनवरी का पूर्ण जीवन बदल गया है। इसके पहले वह वेश्या थी। अब वह परमेश्वर पूजामें लगी है। पर यह बात रघुनाथको सच नहीं लगती। वह पूछताछ शुरू करता है कि, शालीग्रामकी पूजा कबसे शुरू है?

वास्तविक रूपसे अनवरी ने अपने आपको बदल दिया है अब वह रघुनाथसे कहती है कि

" आखिर कर आप मुझे जीने देंगे या नहीं।" -- ४

वह जीवनसे ऊबता गयी है। गुस्सेसे वह यह प्रश्न पूछती है।

(१२) पश्चाताप भावना :-

रामलाल अनवरीको छोड नहीं सकता। उसकी मोहब्बतमें वह डूब चुका है। वह अपने पुत्रको छोड सकता है पर अनवरीको छोडना उसके लिये कठीण है। इसीके लिये वह वकालत भी करता है। पुत्रकीभी हत्या वह कर सकता है।

अनवरीको पश्चाताप होता है कि, वह यहाँ क्यों आई? क्योंकि नाचना, गाना, उसका काम है। एक वेश्या अपना घर नहीं बसा सकती। उसे औरोंके लिये ही समर्पित होना जरूरी है। रामलाल की उम्र तथा मानसिक ढंग अच्छा नहीं है। अनवरी सोचती है कि अगर वह यहाँ न आती तो अच्छा होता। कमसेकम वह सुखी होती। अब वह अपने किये करतूतपर पछताती है।

"अपने पापका फल पा गई। अब छुट्टी देदो। चली जाऊंगी। नाचना गाना हमारा काम है। उसीसे गुजर हो जायेगा। रात दिनकी यह [illegible] नहीं न

रा.का.मंदिर पृ.२८,२७,७८,८८ अमीर

रा.का.मंदिर पृ. ८ अमीर.

आई होती तो शहरका बाजार मेरे हाथमें - - ।"

रघुनाथके वार्तालापमें अम्बरी का कथन है कि, वह सिर्फ शराब पिलानेके सिवाय कोई काम नहीं है। क्योंकि ५,७,साल सिर्फ अंगीठीके रामलालकाही शराब पिलाया है। रामलालनेभी सिर्फ उसे शराबका बोतल देनेके लियेही रखा है। न कि कभी मोहब्बतसे छुआ न कभी बात की। अम्बरीके मनमें यही बात चुभती है कि वह सिर्फ शराबके कामके लिये है। न कि प्रेमकी साथिनी।

"यह तो फजूल कह रहे हो। सिवा शराब पिलानेके और मैं किस कामकी? करीब करीब पाँच साल उसने मुझे कभी मुहब्बतसे पकड़ा नहीं।" - - 2

रामलाल अम्बरी तथा रघुनाथको अलग अलग रखना चाहता है। और दोनोंको अलग रखना कुछ देरके रहना चाहता है अम्बरीसे वह प्रेम करता है इसलिये अलग मकानभी बनाना चाहता है। अंबारी पश्चातापमें पड गयी कि, जो उसने रामलालसे ईमानदारी की तबभी रामलालने उसे माफ कर दिया। अब और उपकार वह चाहती नहीं। वह अब सब छोड देगी और अकेली रहेगी। अब वह ऐसे अंधारे स्थानपर जाना चाहती है जहाँ कोई उसे जानता नहीं। उसे अपने किये पर पश्चाताप होता है। और वह अब सबको पुकारना चाहती है। जीवनकी कडी मजबूत करना चाहती है। पश्चातापकी आगमें वह जली जा रही है।

"मुझसे क्या हो सकेगा क्या नहीं यह तो मैं नहीं जानती। मैं आपकी इज्जत नहीं बिगाडती। मैंने आपके साथ ईमानदारी नहीं की, लेकिन अबभी आपकी माफीकी उम्मीद करती हूँ। कहिये आप मुझे इस आखरी बार माफ कर देंगे? मुझे कहीं ऐसी जगह भेज दो - जहाँ न कोई मुझे जाने और न मैं किसीको जानूँ। - 3

अम्बरीने रामलालका घर छोडनेका निश्चय किया है और वह रघुनाथसे भी माफी चाहती है। इसलिये की अब उसके कारण रघुनाथकोभी कष्ट नहीं होंगे। अब रातमें वह अकेली रहेगी। सारे दिनतेही, पश्चाताप करते करेगी। वह रघुनाथसे अपने कियेकी क्षमा याचना चाहती है।

रा.कामुनीवर पृ.५०-५१ अम्बरी.
५३

"वह नहीं जानती। कहाँ जाना होगा – इतना जानती हूँ – मैंने आपका घर बिगाड़ा था। माफ करना। – – ४

अनवरी का पश्चातापसे मानवकी सुन्दरता तथा पवित्रताकी परीक्षा होती है। मेरा विचार है। अति सत्य। वह पश्चाताप का एक उदाहरण ही है। आँसूके साथ उसका विचारही निकल जाता है। जीवनमें प्रायश्चित करना आवश्यक है। मानव अगर प्रायश्चित नहीं करताती दुःखका अन्त नहीं हो सकता।

अनवरी का कहना है कि अगर जिसने जीवनमें पश्चाताप नहीं किया। उसका जीवन असफल है।

"प्रायश्चित करनेका सबसे सीधा तरीका है। आँसूके साथ उसका विचार निकल जाता है।" – – – ५

"क्यों? मेरी जिंदगी आदमीकी जिंदगी नहीं है? प्रायश्चित किसने नहीं किया? प्रायश्चित करनेके लिये ही आदमीका जन्म हुआ।" – – ६

रघुनाथने अनवरीके सामने मान्य किया है कि अब अनवरीने उसको परमेश्वरकी ओर लगाया है। और अब वह बुरी भावना बदलेगा। पर अनवरी पश्चातापसे भरी है। क्योंकि उसने अपनी भावनाओंका उन्नतीकरण किया है। परमेश्वर पूजामें वह लगी है। फिरभी क्या उसे वेश्या नहीं माना जायेगा? उसको लगा कलंक कभी मिट नहीं सकता। इसीका उसे पश्चाताप होता है। वह मनही मन घुटती जाती है। पश्चाताप करती है वह उसकी भूल है।

"मैं अब भी वही हूँ। इस जीवनके साथ जो कलंक है। मिटाया नहीं जा सकता।" – – ७

रा.का.मंदिर पृ.६१ अनवरी

रा.का मंदिर पृ.८७ अनवरी

(१३) निराशावाद :-

अंबरीका कहना है कि, वह वेश्या की नजर पर अब यह कलंक मिट नहीं सकता। रघुनाथको स्पष्ट किया है कि, अब वह कलंक सचमुच मिट गया है। अंबरी निराशामें डूब चुकी है। वह जीवनमें कुछ परवाह नहीं करती क्योंकि अब उसके पास कुछ क्या है। जीवनका नहीं अर्थ बना हो गया है। कोईभी रास्ता बचा नहीं। वह अब चिन्ताहीन हो नहीं पर एक चिताके पीछे लगी है। क्योंकि जीनेमें कोई अर्थ अब बचा नहीं।

"अब किसलिये? मेरे पास क्या है? जिसकी चिंता करूँ? कोईभी रास्ता मुझे भटका न सकेगा।" -- १

(१४) औरोंको मारनेकी प्रवृत्ती :-

मुनीश्वर अंबरीकी वासनाके पूर्ण रूपसे शिकार है। वह जबरदस्ती उसे आश्रममें लेना चाहता है। रघुनाथ की उपस्थितिके कारण वह छूट टल जाती है। मुनीश्वर अंबरीकी इज्जतपर हाथ डालनाही है कि रघुनाथ आता है। अंबरी रघुनाथसे उसका विचार स्पष्ट करती है कि, "हाँ ठीक है, मार डालो इसे इसीने मुझे स्वर्गसे खींचकर नरकमें पटक दिया।"

अंबरीको जीवनमें असफलता आनेके कारण तथा मुनीश्वरने उसे बर्बाद करनेके कारण वह अब उसे जिंदातक नहीं छोडना चाहती। मारकर उसका अंत करना चाहती है।

मानव जब बहुत कुछ सहन करता है। तब वह अपनी शक्तिपर मात करता है। और संहारककी भूमिका लेता है।

१) राक्षसका मंदिर पृ.८८ अंबरी
२) राक्षसका मंदिर पृ.७९ अंबरी.

(१५) मरघटकी–ती :–

मुनीश्वरकी अपनी पत्नी है। फिरभी वह अमरीको चाहता है। उसे इस बातका पता काफी देरसे लगता है। वह मुनीश्वरको मारनेसे रोकना चाहती है। तथा अपनी पत्नीके पास लौटनेके लिये कहती है। कुछ पानेके लिये कहती है। कुछ पानेके लिये कहती है। मुनीश्वर यह मानता नहीं कि, अब अमरीको वह छोडे। अमरी समझ नहीं पाती कि अब वह कौनसा मार्ग ले। इसलिये वह मुनीश्वरसे कहती है कि अब मुझे मरना चाहिये। क्योंकि जीनेके लिये कोई हेतु चाहिये। ना वह मुनीश्वरकी है ना रामनाथकी। इसीलिये वह सोचती है कि मौत ही एक इलाज है। अमरीका जीवन निराशासे भर गया है।

"मार डालो। मैं जी कर क्या करूँगी?" – – १

"दुनियामें रहनेकेलिये कोई मकसद होना चाहिये" – – २

रोजके मौतसे एक बारकी मौत ही अच्छी है। क्योंकि अमरी का जीवन कटी पतंगसा है। वह दिशा हीन बन गई है। अब वह मरनेका सुख लेना चाहती है। उसके वह क्षण आ चुकी है।

"मुझे मार डालो।
जैसे तुम्हारी तबियत चाहे।" – – ३

रा.का.मंदिर पृ.२९ अमरी.